

UPPCS

15 January, 2025

प्रश्न-1. “भारतीय संस्कृति का इतिहास विविध कला रूपों, साहित्य और स्थापत्य उपलब्धियों से बुनी हुई एक समृद्ध कृति है। चर्चा करें कि ये तत्व प्राचीन से आधुनिक काल तक कैसे विकसित हुए, और उनके महत्व को रेखांकित करें।”

उत्तर: भारतीय संस्कृति, जिसकी जड़ें प्राचीनता में हैं और जो निरंतर विकसित हो रही है, ने वैश्विक धरोहर को गहराई से समृद्ध किया है। भीमबेटका की गुफा चित्रकारी से लेकर आधुनिक वास्तुशिल्प प्रतीकों तक, इसकी कला, साहित्य और वास्तुकला एक गतिशील भावना को प्रतिबिंबित करती है। हाल ही में (2024) यूनेस्को द्वारा असम के 'मोइदाम' को भारत के 43वें विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता देना, राष्ट्र की जीवंत सांस्कृतिक विरासत को रेखांकित करता है। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा समय के साथ विकसित हुई है।

कला का विकास

- ❖ **प्राचीन काल:** भीमबेटका गुफा चित्र (30,000 वर्ष पूर्व) और भरत का नाट्यशास्त्र ने दृश्य और प्रदर्शनकारी कलाओं की नींव रखी, जबकि सिंधु घाटी की मूर्तियों ने प्रारंभिक शिल्प कौशल को प्रदर्शित किया।
- ❖ **मध्यकालीन काल:** चोल कांस्य मूर्तियां (नटराज प्रतिमा) और खजुराहो की मूर्तियां आध्यात्मिक और सौंदर्य की गहराई को दर्शाती हैं। मुगल चित्रकला और फारसी लघु चित्रों ने समन्वयवादी प्रभावों को उजागर किया।
- ❖ **आधुनिक काल:** स्वतंत्रता आंदोलन ने पारंपरिक कला को पुनर्जीवित किया, राजा रवि वर्मा जैसे कलाकारों ने इसका नेतृत्व किया, जबकि अमृता शेरगिल और एम.एफ. हुसैन ने भारतीय कला को वैश्विक मंच पर पहुंचाया।

महत्त्व

- ❖ कला केवल सजावट तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह अभिव्यक्ति, भक्ति, और सांस्कृतिक गर्व का माध्यम बनकर सामूहिक पहचान को बढ़ावा देती रही।

साहित्य

- ❖ **प्राचीन काल:** ऋग्वेद जैसे वैदिक ग्रंथ, महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्य, और संगम साहित्य भारत की समृद्ध भाषायी और दार्शनिक परंपराओं को प्रदर्शित करते हैं।
- ❖ **मध्यकालीन काल:** भक्ति और सूफी काव्य, कबीर के दोहे और मीराबाई के भजन, आध्यात्मिक और सामाजिक समरसता को व्यक्त करते हैं। बरनी के तारीख-ए-फिरोजशाही जैसे ऐतिहासिक ग्रंथों ने राजनीतिक घटनाओं को दर्ज किया।
- ❖ **आधुनिक काल:** राजा राममोहन राय की सुधारवादी साहित्य रचनाएं (गिफ्ट ऑफ मोनोथीस्ट्स, संवाद कौमुदी, मिरात-उल-अखबार), इस्मत चुगताई जैसे नारीवादी लेखकों की आवाजें और आर.के. नारायण की स्वामी एंड फ्रेंड्स जैसी रचनाएं राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रख्यात हुईं।

महत्त्व

- ❖ साहित्य ने नैतिक मूल्यों को आकार दिया, रूढ़िवाद को चुनौती दी, और ऐतिहासिक व सांस्कृतिक ज्ञान को संरक्षित किया।

वास्तुकला

- ❖ **प्राचीन काल:** अजंता-एलोरा गुफाओं, कैलाशनाथ मंदिर जैसी अद्वितीय संरचनाओं, और बृहदेश्वर व कोणार्क के मंदिरों ने प्राचीन वास्तुकला की अद्भुतता को दर्शाया।
- ❖ **मध्यकालीन काल:** ताजमहल और कुतुब मीनार जैसे हिंदू-इस्लामी स्थापत्य, सौंदर्य और कार्यात्मकता का अद्भुत मिश्रण हैं।
- ❖ **आधुनिक काल:** लुटियन्स दिल्ली जैसे औपनिवेशिक युग के स्मारक और चंडीगढ़ व लोटस टेम्पल जैसे स्वतंत्रता-उपरांत स्मारक नवाचार, आधुनिकता और परंपरा का संगम हैं।

महत्त्व

भारतीय कला, साहित्य और वास्तुकला ने सौंदर्यशास्त्र से परे जाकर सांस्कृतिक गर्व और सामूहिक पहचान को प्रतिबिंबित किया। भीमबेटका गुफा चित्रों ने मानव सृजनशीलता को उजागर किया, नाट्यशास्त्र ने प्रदर्शनकारी कलाओं की नींव रखी। रामायण जैसे साहित्यिक ग्रंथों ने नैतिक मूल्यों को आकार दिया और भक्ति-सूफी काव्य ने रूढ़ियों को चुनौती दी। अजंता गुफाओं से लेकर ताजमहल तक के वास्तुशिल्प चमत्कार आध्यात्मिकता और सामाजिक-राजनीतिक शक्ति का प्रतीक बने।

निष्कर्ष

भारत की सांस्कृतिक विकास यात्रा लचीलापन और अनुकूलनशीलता को रेखांकित करती है। अपनी समृद्ध धरोहर को संरक्षित करके, भारत दुनिया को प्रेरित कर सकता है और अपनी जीवंत विरासत को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचा सकता है।

UPPCS

15 January, 2025

प्रश्न-2. प्रश्न 2. भारत में बौद्ध, हिंदू और जैन गुफाओं की वास्तुकला शैलियों की तुलना करें।

उत्तर: भारत में गुफा वास्तुकला धार्मिक और कलात्मक अभिव्यक्ति का एक अनूठा और महत्वपूर्ण रूप है। यह भारत के तीन प्रमुख धर्मों—बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म और जैन धर्म—के आध्यात्मिक आदर्शों और सांस्कृतिक विकास को दर्शाती है। गुफाएं पूजा स्थलों और कलात्मक सृजन के माध्यम के रूप में कार्य करती थीं, जिनकी वास्तुकला शैलियां उनके संबंधित विश्वासों को परिलक्षित करती हैं।

तुलना

❖ बौद्ध गुफाएं

- + **स्तूप, चैत्य और विहार:** बौद्ध गुफाएं ध्यान और मठवासी जीवन पर केंद्रित थीं। इनमें स्तूप (अस्थि अवशेष), चैत्य (प्रार्थना कक्ष), और विहार (मठवासी निवास) शामिल होते थे।
- + **कथात्मक कला:** अजंता और कार्ले जैसी गुफाओं की दीवारों और छतें बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं को दर्शाने वाले जटिल भित्तिचित्रों और मूर्तियों से सजी हुई हैं।
- + **वास्तुकला:** ये गुफाएं कठोर चट्टानों में तराशी गई थीं, जो विस्तृत मूर्तिकला के लिए आदर्श थीं। इनका लेआउट सुव्यवस्थित था, जिसमें विशाल हॉल और स्पष्ट रूप से परिभाषित पूजा क्षेत्र शामिल थे।

❖ हिंदू गुफाएं

- + **पौराणिक विषय:** हिंदू गुफाओं में रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों से लिए गए पौराणिक कथाओं के विस्तृत चित्रण होते थे। ये गुफाएं दिव्य शक्ति और ब्रह्मांडीय व्यवस्था की भव्यता पर केंद्रित थीं।
- + **एलोरा की दशावतार मूर्तियां:** एलोरा गुफाएं विशेष रूप से दशावतार मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं, जो विष्णु के दस अवतारों को दर्शाती हैं।
- + **वास्तुकला:** इन गुफाओं में विस्तृत मूर्तिकला और अनुष्ठानों के लिए बड़े हॉल और गर्भगृह होते थे।

❖ जैन गुफाएं

- + **तीर्थंकरों का चित्रण:** जैन गुफाओं में तीर्थंकरों की ध्यानमग्न मुद्राओं में मूर्तियां मिलती हैं।
- + **जटिल नक्काशी:** उदयगिरि और खंडगिरि जैसी गुफाएं अपनी उत्कृष्ट और जटिल नक्काशी के लिए जानी जाती हैं।
- + **वास्तुकला:** ये गुफाएं अक्सर बलुआ पत्थर को काटकर बनाई जाती थीं, जिसमें छोटे-छोटे कक्ष और निम्न प्रवेश द्वार होते थे। जैन गुफाएं सादगी और तपस्वी स्वभाव को दर्शाती थीं।

निष्कर्ष

बौद्ध, हिंदू और जैन गुफाएं धार्मिक महत्व के स्थल थीं, जिनकी वास्तुकला शैलियां उनके अद्वितीय आध्यात्मिक आदर्शों को दर्शाती हैं। बौद्ध गुफाएं ध्यान और मठवासी जीवन पर केंद्रित थीं, हिंदू गुफाएं भव्यता और पौराणिक कथाओं पर, और जैन गुफाएं सादगी और तपस्वी जीवनशैली पर। इन विविधताओं के बावजूद, सभी गुफाओं में पशु-पौधों के चित्रण और अलंकरण जैसे सामान्य तत्व मिलते हैं, जो प्राचीन भारतीय गुफा वास्तुकला की धार्मिक और सांस्कृतिक समृद्धि को उजागर करते हैं।

UPPCS

15 January, 2025

प्रश्न-3. मथुरा और गांधार कला सम्प्रदायों (स्कूल ऑफ आर्ट) की कलात्मक शैलियों और सांस्कृतिक प्रभावों की तुलना करें और अंतर बताएं।

उत्तर: मथुरा और गांधार कला सम्प्रदाय (Mathura and Gandhara schools of art) प्राचीन भारतीय कला की दो महत्वपूर्ण परंपराएं हैं, जो लगभग एक ही समय में लेकिन अलग-अलग क्षेत्रों में उत्पन्न हुईं, प्रत्येक अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक और कलात्मक प्रभावों को दर्शाती हैं। दोनों कला शैलियों ने मुख्य रूप से बौद्ध कला के विकास में योगदान दिया, लेकिन उनके शैलीगत लक्षण और सांस्कृतिक संदर्भ में महत्वपूर्ण अंतर हैं, जो एक दिलचस्प तुलना प्रस्तुत करते हैं।

मथुरा स्कूल ऑफ आर्ट

- ❖ **कलात्मक शैली:** मथुरा स्कूल ऑफ आर्ट का विकास मथुरा क्षेत्र (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में हुआ था, और यह मुख्य रूप से अपनी प्राकृतिक और गतिशील कलात्मक शैली के लिए जानी जाती है। मूर्तियों में मजबूत मांसल आकृतियां, तरल मुद्राएं और व्यक्तिपरक चेहरे की विशेषताएं प्रमुख हैं। इन आकृतियों में अक्सर जीवन्तता और ऊर्जा की भावना झलकती है, साथ ही इनके बाल और वस्त्र भी विस्तृत रूप से बनाए गए हैं। मथुरा के बुद्ध की मूर्तियां भारतीय पारंपरिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती हैं, जो दिव्य प्रतीकवाद पर अधिक ध्यान केंद्रित करती हैं और बुद्ध के शारीरिक वास्तविकता की बजाय उनकी आध्यात्मिक सार्थकता को चित्रित करती हैं।
- ❖ **सांस्कृतिक प्रभाव:** मथुरा कला शैली भारतीय शास्त्रीय परंपराओं में गहराई से निहित है और इस क्षेत्र के धार्मिक और सांस्कृतिक वातावरण को प्रतिबिंबित करती है। मूर्तियों में मौर्य और मौर्योत्तर काल के प्रभाव दिखाई देते हैं, जो मानव अभिव्यक्ति और धार्मिक रूपों में बढ़ती रुचि को प्रदर्शित करते हैं। मथुरा कला शैली ने बुद्ध के प्रतीकात्मक चित्रण पर भी ध्यान केंद्रित किया, जो स्थानीय विश्वास प्रणालियों और धार्मिक अभ्यासों के अनुरूप था।

गांधार स्कूल ऑफ आर्ट

- ❖ **कलात्मक शैली:** गांधार कला सम्प्रदाय, जो वर्तमान समय के पाकिस्तान और अफगानिस्तान के क्षेत्रों में फल-फूल रहा था, विशेष रूप से ग्रीको-रोमन प्रभाव के लिए जाना जाता है क्योंकि इस क्षेत्र का ग्रीक संस्कृति के साथ संपर्क हुआ था, खासकर अलेक्जेंडर द ग्रेट के आक्रमण के बाद। इस कला सम्प्रदाय की विशेषता है वास्तविक कपड़ों की नकल, प्राकृतिक चेहरे की अभिव्यक्तियां और ग्रीक-शैली के बुद्ध के घुंघराले बाल। आकृतियों को त्रि-आयामी, मूर्तिकलात्मक तरीके से चित्रित किया गया है, जिसमें शास्त्रीय ग्रीक तकनीकों को शामिल किया गया है, जैसे मानव शरीर रचना का विस्तृत निरूपण और लिपटे हुए वस्त्रों का यथार्थवादी चित्रण।
- ❖ **सांस्कृतिक प्रभाव:** गांधार कला सम्प्रदाय अंतर-सांस्कृतिक संलयन का एक उदाहरण है, जहाँ ग्रीक कलात्मक तत्वों ने भारतीय बौद्ध परंपराओं के साथ मिलकर एक नया रूप लिया। यह हेलनिस्टिक शैली से गहराई से प्रभावित था, क्योंकि ग्रीक कला (यूनानी कला) में मानव शरीर का अधिक यथार्थवादी चित्रण किया गया था। गांधार स्कूल ऑफ आर्ट ने बुद्ध के मानव रूप का भी नवप्रवर्तन किया, जो बौद्ध कला में व्यापक रूप से प्रचलित हुआ। इसके अलावा, गांधार कला में कथा-कथन महत्वपूर्ण था, जिसमें कई मूर्तियां बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं से संबंधित दृश्यों को प्रदर्शित करती हैं।

तुलना और अंतर

1. **शैलीगत अंतर:** मथुरा कला सम्प्रदाय प्रतीकात्मकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए गतिशील, अभिव्यंजक आकृतियां प्रस्तुत करता है, जबकि गांधार कला सम्प्रदाय विस्तृत यूनानी शैली के वस्त्र और चेहरे की विशेषताओं के साथ यथार्थवादी मानव चित्रण पर जोर देता है।
2. **सांस्कृतिक प्रभाव:** मथुरा कला भारतीय पारंपरिक परंपराओं का प्रतिबिंब है, जबकि गांधार कला ग्रीक और भारतीय संस्कृतियों का संलयन है।
3. **धार्मिक विषय:** दोनों कला परंपराएं बौद्ध विषयों पर ध्यान केंद्रित करती हैं, लेकिन गांधार ने बुद्ध के मानव रूप को प्रस्तुत किया, जो प्रारंभिक भारतीय बौद्ध कला में नहीं था, जबकि मथुरा ने प्रतीकात्मक दृष्टिकोण को बनाए रखा।

निष्कर्ष

मथुरा और गांधार कला सम्प्रदाय दो अलग-अलग कलात्मक परंपराएं हैं, जो अपने-अपने सांस्कृतिक संदर्भों से प्रभावित थीं। जहां मथुरा कला भारतीय स्वदेशी परंपराओं में निहित है, जिसमें प्रतीकवाद और गतिशील रूपों पर जोर दिया गया है, वहीं गांधार कला सम्प्रदाय एक अंतर-सांस्कृतिक मिश्रण को दर्शाता है, जो बौद्ध इतिहास की प्रतीकात्मकता में यूनानी यथार्थवाद को एकीकृत करता है। दोनों कला परंपराओं ने बौद्ध कला के विकास और इसके वैश्विक प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

UPPCS

15 January, 2025

प्रश्न-4: द्रविड़ और नागर शैली की मंदिर वास्तुकला की विशेषताओं की तुलना करें और अंतर बताएं। अपने उत्तर को भारत के विभिन्न क्षेत्रों के उदाहरणों से स्पष्ट करें।

उत्तर: भारत की मंदिर वास्तुकला, को मुख्यतः द्रविड़ (दक्षिणी) और नागर (उत्तरी) शैलियों में वर्गीकृत किया गया है, जो क्षेत्रीय, सांस्कृतिक और जलवायवीय प्रभावों से आकार लेती है। ये वास्तु परंपराएं प्राचीन भारतीय कला और धर्म की विविधता और कुशलता को प्रदर्शित करती हैं।

द्रविड़ शैली

❖ द्रविड़ शैली, जो दक्षिण भारत में प्रमुख रूप से देखी जाती है, 7वीं से 17वीं शताब्दी ईस्वी के बीच पल्लव, चोल, पांड्य और विजयनगर शासकों के अधीन विकसित हुई।

मुख्य विशेषताएं

- ❖ **विमान:** केंद्रीय टॉवर पिरामिड के आकार का होता है, जो घटते हुए स्तरों में ऊपर की ओर उठता है।
 - + **उदाहरण:** तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर, जिसे राज राज चोल ने बनवाया, एक विशाल विमान को प्रदर्शित करता है।
- ❖ **गोपुरम (प्रवेश द्वार):** बड़े और भव्य प्रवेश द्वार, विशेष रूप से बाद के काल में, विमान से भी ऊँचे होते हैं।
 - + **उदाहरण:** मदुरै का मीनाक्षी मंदिर।
- ❖ **संवृत परिसर:** मंदिर ऊँची चारदीवारी से घिरे होते हैं, जिनमें सहायक मंदिर और अनुष्ठानिक शुद्धिकरण के लिए जलाशय होते हैं।
- ❖ **शिल्पकारी:** मूर्तिकला में देवी-देवताओं, पौराणिक कथाओं और दैनिक जीवन के दृश्य शामिल होते हैं।
 - + **उदाहरण:** महाबलीपुरम का शोर मंदिर प्रारंभिक द्रविड़ मूर्तिकला की उत्कृष्टता को प्रदर्शित करता है।
- ❖ **सामग्री:** ग्रेनाइट, एक टिकाऊ सामग्री, का व्यापक उपयोग, क्षेत्रीय उपलब्धता को दर्शाता है।

नागर शैली

❖ नागर शैली, जो उत्तरी भारत में प्रमुख रूप से देखी जाती है, 6वीं से 13वीं शताब्दी ईस्वी के बीच गुप्त, प्रतिहार, चंदेल और अन्य राजवंशों के अधीन विकसित हुई।

मुख्य विशेषताएं

1. **शिखर:** मंदिर का शीर्ष वक्राकार होता है, जो ऊर्ध्वाधर रूप से उठता है और आमलक (रेखा-युक्त पत्थर) व कलश से सुशोभित होता है।
 - ❖ **उदाहरण:** खजुराहो का कंदरिया महादेव मंदिर।
2. **खुला डिजाइन:** द्रविड़ मंदिरों के विपरीत, नागर मंदिर दीवारों से घिरे नहीं होते, जिससे यह अधिक खुली संरचना प्रदान करते हैं।
3. **मंडप (हॉल):** अक्सर कई स्तंभों वाले हॉल गर्भगृह तक पहुँचने का मार्ग बनाते हैं।
 - ❖ **उदाहरण:** गुजरात का मोढेरा का सूर्य मंदिर अपने सुंदर मंडपों के लिए प्रसिद्ध है।
4. **क्षेत्रीय भिन्नताएं:** नागर मंदिरों में रेखा-प्रसाद (वक्राकार शिखर) जैसे उप-शैली और फामसाना (निम्न पिरामिड जैसी छत) राजस्थान के मंदिरों में देखी जाती हैं।
 - ❖ **उदाहरण:** ओडिशा का लिंगराज मंदिर।
5. **सामग्री:** बलुआ पत्थर और संगमरमर का व्यापक उपयोग, स्थानीय संसाधनों की उपलब्धता को दर्शाता है।

प्रभाव और सांस्कृतिक परावर्तन

वेसर शैली, जो मध्य भारत में विकसित हुई, द्रविड़ और नागर परंपराओं का मिश्रण थी। इसका उदाहरण पट्टदकल का विरुपाक्ष मंदिर है, जिसमें द्रविड़ शैली का विमान और नागर शैली का शिखर एकीकृत हैं। द्रविड़ मंदिर, जैसे चोल मंदिर, शैव धर्म और भव्यता को प्राथमिकता देते हैं, जबकि नागर मंदिर, जैसे खजुराहो, तांत्रिक प्रभावों और जटिल मूर्तिकला को उजागर करते हैं।

निष्कर्ष

द्रविड़ और नागर मंदिर वास्तुकला भारत की कलात्मक उत्कृष्टता और क्षेत्रीय विविधता का प्रतीक हैं। द्रविड़ शैली विशाल विमानों और संवृत स्थानों पर जोर देती है, जबकि नागर शैली वक्राकार शिखरों और खुलेपन को प्राथमिकता देती है। ये वास्तु परंपराएं न केवल पूजा स्थल हैं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर के जीवंत प्रमाण भी हैं।

UPPCS

15 January, 2025

प्रश्न-5. संगम साहित्य के सांस्कृतिक महत्व की चर्चा करें।

उत्तर: संगम साहित्य, जो तमिल साहित्य का सबसे प्राचीन ज्ञात संग्रह है, 200 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी तक के काल से संबंधित है। तमिल में लिखा गया यह साहित्य संग्रह प्राचीन तमिलकम की सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति को दर्शाता है, जिसमें तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक के कुछ हिस्से, कोडगू और चित्तूर शामिल हैं। संगम ग्रंथों का सांस्कृतिक महत्व अत्यधिक है क्योंकि ये प्रारंभिक तमिल समाज की विचारधारा, परंपराओं और पड़ोसी संस्कृतियों के साथ उसके संपर्क को समझने का एक अद्वितीय दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, विशेष रूप से प्रेम, युद्ध, शासन और दर्शन के दृष्टिकोण से।

संगम साहित्य का सांस्कृतिक महत्व

❖ “संगम” शब्द उन विद्वानों की सभाओं को संदर्भित करता है जहां तमिल कवि अपनी काव्य रचनाओं का निर्माण और उनका प्रस्तुतीकरण करते थे। इन सभाओं ने मौखिक काव्य को संहिताबद्ध करने और तमिल साहित्यिक परंपरा की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संगम साहित्य दो प्रमुख शैलियों में विभाजित है: अकम (प्रेम कविता) और पुरम (युद्ध और शासन पर सार्वजनिक कविता)।

अकम कविता: प्रेम का सार

❖ अकम शैली मुख्य रूप से प्रेम के विषयों पर केंद्रित होती है, जो विभिन्न भावनात्मक स्थितियों जैसे वियोग, अभिलाषा और पुनर्मिलन को व्यक्त करती है। यह कविता सात प्रकार के प्रेम के माध्यम से व्यक्त की जाती है, जो रोमांटिक रिश्तों के विभिन्न पहलुओं का अन्वेषण करती है, जैसे कि उचित प्रेम, विवाह से पहले का प्रेम और विवाहेतर संबंध।

❖ **सांस्कृतिक महत्व:** ये कविताएं मानवीय भावनाओं और अंतर-संबंधों की जटिलता को चित्रित करती हैं, जो तमिल प्रेम की समझ का एक समृद्ध रूप प्रस्तुत करती हैं।

पुरम कविता: वीरता, नायकत्व और युद्ध

❖ पुरम शैली वीरता और नायकत्व के विषयों को उजागर करती है, जिसमें विशेष रूप से योद्धाओं के आदर्श और युद्ध के परिणामों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

❖ **सांस्कृतिक महत्व:** यह समाज के कर्तव्य, सम्मान और वीरता से संबंधित मूल्यों को दर्शाती है। ये कविताएं सैनिकों की साहसिकता और बलिदान, युद्ध से संबंधित नैतिक और दार्शनिक उलझनों को चित्रित करती हैं, जो प्राचीन तमिल समाज के सामाजिक ताने-बाने के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं।

तिनाई का सिद्धांत

❖ संगम साहित्य का एक विशिष्ट पहलू तिनाई का सिद्धांत है, जो काव्य विषयों को विशेष परिस्थितिकियों या पर्यावरणों के अनुसार वर्गीकृत करता है, जैसे पहाड़ी क्षेत्र, समुद्र-तट और उपजाऊ मैदानी क्षेत्र।

❖ **सांस्कृतिक महत्व:** यह वर्गीकरण तमिल लोगों और उनके पर्यावरण के बीच गहरे संबंध को प्रदर्शित करता है, जो मानव भावनाओं और सामाजिक परिस्थितियों के लिए प्रकृति को रूपक के रूप में उपयोग करता है। यह तमिल साहित्यिक अभिव्यक्ति में प्रकृति और मानव जीवन के सांस्कृतिक एकीकरण को भी दर्शाता है।

राजनीतिक और सामाजिक अंतर्दृष्टि

❖ संगम साहित्य प्राचीन तमिल समाज की राजनीतिक और सामाजिक संरचना के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। यह तमिल राज्यों, विशेष रूप से पाण्ड्य, चोल और चेर राजवंशों की कार्यप्रणाली को दर्शाता है, जिन्होंने संगमों का संरक्षक किया। ग्रंथों में निम्नलिखित पहलुओं को उजागर किया गया है:

- + राजाओं और योद्धाओं की भूमिकाएं
- + कुटुंब का महत्व
- + व्यक्तिगत और राजनीतिक रिश्तों को नियंत्रित करने वाली आचार संहिता

तमिल और आर्य संस्कृतियों का मिलाजुला प्रभाव

❖ संगम साहित्य तमिल और आर्य संस्कृतियों के मिले-जुले प्रभाव को भी दर्शाता है, जैसा कि विद्वान नीलकण्ठ शास्त्री ने इंगित किया है। यह संलयन विशेष सांस्कृतिक प्रथाओं और भाषायी लक्षणों को अपनाते में देखा जाता है, जो दोनों संस्कृतियों के मिश्रण को समय के साथ दर्शाता है।

तमिल संस्कृति पर दीर्घकालिक प्रभाव

❖ संगम साहित्य का प्रभाव गहरा और दीर्घकालिक रहा है, जिसने तमिल पहचान, साहित्य और कला को आकार दिया। इसने बाद में तमिल काव्य कृतियों और दार्शनिक विचारों की नींव रखी, जैसे कि सिलप्पादिकराम और मणिमेखलै। इन कृतियों में संगम के विषयों और संरचनाओं का गहरा प्रभाव था। इन काव्यों में चित्रित नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य आज भी तमिल संस्कृति में गूंजते हैं और नृत्य, संगीत और नाटक जैसे कला रूपों को प्रेरित करते हैं।

सामाजिक मुद्दे

- ❖ संगम कवियों के साहित्यिक कार्यों ने महिलाओं की भूमिका, जाति व्यवस्था तथा शासकों और प्रजाओं के बीच रिश्तों जैसे विभिन्न सामाजिक मुद्दों को भी संबोधित किया। इन ग्रंथों में दर्शाए गए न्यायपूर्ण राजा, वीर योद्धा और पतिव्रता महिला के चित्रण ने तमिल भाषी क्षेत्रों में सामाजिक मानकों और आदर्शों को आकार दिया।

निष्कर्ष

संगम साहित्य तमिल सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण आधार बना हुआ है, जो प्राचीन तमिलकम के भावनात्मक, सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक जीवन के बारे में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। इसके विषय आज भी तमिल साहित्य, कला और समाज के मूल्यों को आकार देने में सहायक हैं।

